

मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

**जामिया ने मालदीव गणराज्य से आए ICCR, MEA, भारत सरकार के अकादमिक विज्ञाटर श्री
अला दीदी के व्याख्यान का आयोजन किया**

नई दिल्ली, 15 अप्रैल, 2026

इतिहास और संस्कृति विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने पिछले सप्ताह विभाग के सेमिनार कक्ष में एक वार्ता और इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन किया। इस सत्र में मालदीव गणराज्य से आए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय (MEA) के तहत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) के अकादमिक विज्ञाटर और कला और विरासत मंत्रालय के अनुसंधान विश्लेषक श्री अला दीदी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

जामिया परिसर में पहुंचने पर, श्री अब्दुल्ला आसिम, अपनी सोशल मीडिया टीम और ICCR के संपर्क अधिकारी श्री दीपक के साथ, श्री अला दीदी ने विभाग अध्यक्ष प्रो. प्रीति शर्मा और संकाय सदस्यों के साथ एक बैठक की। मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन प्रो. इक़्तिदार मोहम्मद खान और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, जामिया की डीन प्रो. उश्विंदर कौर पोपली भी इस चर्चा में शामिल हुईं। अतिथि को जामिया के गौरवशाली इतिहास और इसके वर्तमान विस्तार तथा प्रगति के बारे में जानकारी दी गई। श्री दीदी ने जामिया के साथ मालदीव के संबंधों और अतीत में उच्च शिक्षा के लिए जामिया आने वाले मालदीव के छात्रों की विरासत के बारे में भी दिलचस्प तथ्य और जानकारी साझा की। वह जामिया मिल्लिया के तत्कालीन कुलपति और भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन द्वारा एक मालदीवियन विद्वान को लिखे गए पत्र की एक प्रति भी अपने साथ लाए थे।

डीन और विभागाध्यक्ष के साथ प्रारंभिक बैठक के बाद, श्री दीदी ने छात्रों को संबोधित किया और "इंडिया-मालदीव हिस्टोरिकल एंड सिविलाइज़ेशन टाइस एंड लेवेराजिंग दीज़ लिंकेज टू एन्हेंस प्रेजेंट एंड फ्यूचर बाईलेटरल टाइस" विषय पर एक व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में संकाय सदस्यों, शोधार्थियों और छात्रों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

जामिया की सांस्कृतिक परंपरा को दर्शाते हुए, कार्यक्रम की शुरुआत उर्दू विभाग के डॉ. शाहनवाज़ फ़य्याज़ द्वारा 'तिलावते-कुरान' और 'जामिया तराना' के गायन के साथ हुई। विभाग की अध्यक्ष प्रो. प्रीति शर्मा ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि ICCR द्वारा की गई इस तरह की पहल, साझा शैक्षणिक लक्ष्यों को बढ़ावा देने और सहयोगात्मक अनुसंधान के अवसरों को खोजने के लिए अनुकूल हैं। उन्होंने इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन के लिए जेएमआई के माननीय कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ़ और जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी द्वारा दिए गए उदार समर्थन और प्रोत्साहन की सराहना की। इसके बाद, मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन प्रो. इक़्तिदार मोहम्मद खान ने अपने आशीर्वचन दिए, जिन्होंने इस तरह की शैक्षणिक गतिविधियों की प्रासंगिकता पर जोर दिया। अंतर्राष्ट्रीय संबंध की डीन प्रो. उश्विंदर पोपली ने जेएमआई के अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों और कार्यक्रमों के बारे में जानकारी साझा की, जो इसकी वैश्विक उपस्थिति को प्रमाणित करती है।

मुख्य वक्ता का औपचारिक स्वागत और सम्मान मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध के डीन और इतिहास विभाग के अध्यक्ष द्वारा किया गया। वक्ता का औपचारिक परिचय डॉ. रोहमा जावेद राशिद द्वारा प्रस्तुत किया गया।

अपने दिलचस्प व्याख्यान में, श्री अला दीदी ने भारत और मालदीव के बीच लंबे समय से चले आ रहे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर चर्चा की। उन्होंने इस आम गलत धारणा को चुनौती दी कि मालदीव का उदय केवल औपनिवेशिक हस्तक्षेप के बाद हुआ; इसके बजाय उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस क्षेत्र का इतिहास कहीं अधिक पुराना है, जिसकी जड़ें ईसा पूर्व के समय तक जाती हैं। उन्होंने बताया कि ऐतिहासिक स्रोतों में मालदीव को अलग-अलग नामों से जाना जाता था और इसका विकास दक्षिण भारतीय द्रविड़ आबादी और भारत-आर्यन बसने वालों के बीच आपसी मेलजोल के माध्यम से हुआ।

श्री दीदी ने मालदीव की राजनीतिक और सामाजिक संरचना के बारे में भी विस्तार से बात की, और इस बात पर प्रकाश डाला कि 1968 तक यहाँ राजशाही कायम थी और यहाँ शासन की एक प्राचीन प्रणाली थी जो 'मंडलम' में विभाजित थी। उन्होंने आगे समझाया कि मालदीव का समाज मूल रूप से मातृसत्तात्मक था, और इस बात पर भी प्रकाश डाला कि व्यवहार में ऐसी प्रणाली किस प्रकार कार्य करती थी।

व्याख्यान में 1153 ईस्वी में मालदीव में इस्लाम के आगमन का भी ज़िक्र किया गया, और यह बताया गया कि इस संक्रमण के संबंध में कई सिद्धांत प्रचलित हैं। श्री दीदी ने भारत और मालदीव के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बेहतर ढंग से समझने के लिए इन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को समझना कितना महत्वपूर्ण है, इस बात पर ज़ोर दिया। उन्होंने इस विचार के साथ अपने व्याख्यान का समापन किया कि ये दोनों देश अपने साझा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को आधार बनाकर द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत करने में किस प्रकार की भूमिका निभा सकते हैं। इस सत्र के बाद एक ज़ोरदार प्रश्न-उत्तर सत्र हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने वक्ता के साथ मातृसत्तात्मक समाज की कार्यप्रणाली, इस्लामीकरण की प्रक्रिया, और समकालीन भारत-मालदीव संबंधों जैसे विषयों पर चर्चा की।

इस सत्र के बाद एक ज़ोरदार प्रश्नोत्तर सत्र हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने वक्ता के साथ मातृसत्तात्मक समाज के कामकाज, इस्लामीकरण की प्रक्रिया, और समकालीन भारत-मालदीव संबंधों जैसे विषयों पर चर्चा की।

प्रो. निशात मंज़र ने धन्यवाद ज्ञापित किया, जिसमें उन्होंने सत्र को ज्ञानवर्धक और दिलचस्प बनाने के लिए वक्ता, आयोजकों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

व्याख्यान के बाद, श्री दीदी ने जेएमआई के माननीय कुलपति, प्रो. मज़हर आसिफ़ से मुलाकात की। उनके साथ प्रो. प्रीति शर्मा और प्रो. उश्विंदर पोपली भी थीं। उन्होंने भारत-मालदीव और पश्चिम एशिया से संबंधित विभिन्न शैक्षणिक, ऐतिहासिक संबंधों, सांस्कृतिक जुड़ाव और समकालीन मुद्दों पर चर्चा की। कुलपति ने अतिथि के साथ जामिया केंद्रीय पुस्तकालय के समृद्ध पांडुलिपि संग्रह के बारे में जानकारी साझा की। प्रो. आसिफ़ ने विज़िटर को पुस्तकालय कैटलॉग भी भेंट की।

कुल मिलाकर, यह एक शैक्षणिक रूप से समृद्ध अनुभव साबित हुआ।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी